जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

epaper.rashtradoot.com

ARBIT

They Don't Celebrate Diwali!

The people of Bishrakh, in Uttar Pradesh, believe that 'Bishrakh' comes from 'Vishrava,' Ravana was actually born there. That makes him son of the soil. How can they celebrate his fall?

Big Horned Bulls

Love and Control Enchantments of the Heart: Meat, Flowers, and Forbidden Recipes of Medieval Women

'जरुरी नहीं है, नीतीश ही एनडीए के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हों'

अमित शाह जदयू को संदेश दे रहे हैं कि शायद मु.मंत्री भाजपा का ही होगा, यदि संख्या बल पर्याप्त रहा

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 अक्टूबर। जिस मसले पर सार्वजनिक रुप से संदेह किया जा रहा था, गृह मंत्री अमित शाह ने उसकी पुष्टि करते हुए कहा है कि चुनाव के बाद की स्थिति में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री पद के लिये एनडीए की स्वाभाविक पसंद नहीं होंगे।

जेडीयू नेता और वर्तमान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भाजपा के उस फैसले से नाराज़ हैं, जिसके तहत पार्टी ने चिराग पासवान की एलजेपी (आर) को जेडीयू की परंपरागत सीटें आवंटित कर दी थीं। इसके बाद नीतीश ने मांग की थी कि भाजपा सार्वजनिक रूप से यह घोषणा करे कि चुनाव के बाद उन्हें एक बार फिर मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। हालांकि, पासवान को जेडीयू के गढ़ों से पीछे हटाने में नीतीश सफल रहे, लेकिन भाजपा नेतृत्व ने अब तक नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने से परहेज़ किया है।

गुरुवार को पटना पहुँचने पर गृह मंत्री ने इस मुद्दे पर सभी विकल्प खुले छोड़ते हुए कहा, "मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित करने का अधिकार मेरे पास बिल्कुल नहीं है। चुनाव के बाद, एनडीए के घटक दल अपने नेताओं का चयन करेंगे और फिर एक संयुक्त बैठक में मुख्यमंत्री का फैसला किया जाएगा। विधायक तय करेंगे कि मुख्यमंत्री कौन होगा।"

हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि चुनाव 'कुमार के नेतृत्व में' लड़ा जा रहा है। भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए एक और कार्यकाल की मांग करते हुए, केन्द्र की सत्ता में बरकरार रखने का प्रयास किया है, और कई राज्यों में पार्टी ने मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार को पहले ही स्पष्ट कर दिया है। लेकिन इस बार नीतीश कुमार का नाम साफ तौर पर घोषित न करके, शाह ने यह संकेत दिया है कि भविष्य के मुख्यमंत्री के पद पर अंतिम निर्णय भाजपा ही लेगी।

अगर आगामी विधानसभा चुनावों में जेडीयू का प्रदर्शन भाजपा की तुलना में कमजोर रहा, तो लगभग तय है कि नीतीश कुमार को एक "फेट

(शेष पृष्ठ 5 पर)

भाजपा-जदयू के तनावपूर्ण संबंध और उग्र होंगे?

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 अक्टूबर। बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के नामांकन प्रक्रिया के शुक्रवार को पूरा होते ही, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के भीतर मतभेद खुलकर सामने आ गए। जनता दल (यूनाइटेड) के वरिष्ठ नेता और विधान परिषद सदस्य नीरज कुमार, जो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के करीबी माने जाते हैं, ने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की खुली आलोचना की। यह विवाद उस समय भड़का, जब शाह ने अपने एक टेलीविज़न इंटरव्यू में कहा कि बिहार का अगला मुख्यमंत्री एनडीए के नवनिर्वाचित विधायक तय करेंगे, न कि पहले से घोषित किया जाएगा।

शाह के इस बयान को व्यापक रूप से इस संकेत के रूप में देखा गया कि भाजपा शायद नीतीश कुमार के विकल्पों पर विचार कर रही है। इस बयान के तुरंत बाद जेडीयू नेताओं ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। नीरज कुमार ने पलटवार करते हुए कहा कि नीतीश कुमार एनडीए में निर्विवाद नेता हैं और 2025 के चुनावों के बाद भी वे ही मुख्यमंत्री रहेंगे। उनका यह तीखा जवाब इस बात का संकेत था कि दोनों सहयोगी दलों के बीच नेतृत्व और सीट बंटवारे को लेकर असहजता बढ़ रही है। राजनीतिक पर्यवेक्षक अमित शाह के बयान की टाइमिंग से हैरान रह गए, क्योंकि यह उस समय आया, जब एनडीए में सीट बंटवारे पर पहले ही तनाव चल रहा था।

कई लोगों का मानना था कि शाह के शब्दों ने पहले से सुलगती आग में घी डालने का काम किया है। जेडीयू सूत्रों ने इस बयान को अनावश्यक और उकसाने वाला बताया, खासकर तब, जब पार्टी पहले से ही केन्द्रीय मंत्री चिराग पासवान और उनकी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रति

(शेष पृष्ठ 5 पर)

ट्रंप एक बार फिर यूक्रेन में युद्ध की स्थिति सुलझाने में जुटे

हमास-इज़रायल संघर्ष को समाप्त कराने में मिली सफलता के बाद, (शेष पृष्ठ 5 पर)

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 अक्टूबर। हमास आतंकियों और इज़रायल के बीच शांति समझौता करवाने और बंधकों की रिहाई सुनिश्चित करने के बाद, अब अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप यूरोप में शांति बहाल करने और यूक्रेन युद्ध को खत्म करने की एक और कोशिश कर रहे हैं।

ट्रंप शुक्रवार को वॉशिंगटन में यूक्रेन के राष्ट्रपति से मुलाकात करेंगे और करीब दो हफ्तों में हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में ट्रंप और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच एक और शिखर वार्ता आयोजित की जा रही है।

हंगरी के राष्ट्रपति विक्टर ऑर्बान, जो पुतिन के कट्टर समर्थक माने जाते हैं, ट्रंप-पुतिन बैठक आयोजित करने की पहल कर रहे हैं। यूरोपीय संघ का सदस्य होने के बावजूद, ऑर्बान ने यूक्रेन को हथियारों की आपूर्ति या यूरोपीय संघ द्वारा जैलैंस्की को समर्थन का लगातार विरोध किया है।

■ **हमास व इज़रायल के बीच शांति करवाने के बाद ट्रंप के हौसले बुलंद।**

इसके बजाय, वे यूक्रेन युद्ध समाप्त करने के सम्बंध में अपने अलग प्रस्ताव पेश करते रहे हैं, जो अधिकतर रूस के पक्ष में रहे हैं। अब, अगर विक्टर ऑर्बान पुतिन और ट्रंप के बीच शांति वार्ता की व्यवस्था कर रहे हैं, तो यह आशंका जताई जा रही है कि यह वार्ता भी यूक्रेन संकट पर रूस की शर्तों के इर्द-गिर्द घूम सकती है।

ऑर्बान ने बताया कि हंगरी का विदेश मंत्रालय देश में पुतिन-ट्रंप शिखर सम्मेलन की मेज़बानी के लिए पूरी तरह जुटा हुआ है। हालांकि इसमें एक बड़ी अड़चन भी है, अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (इन्टर नैशनल क्रिमिनल कोर्ट -आई.सी.सी.) ने पुतिन के खिलाफ एक गिरफ्तारी वारंट जारी किया है, जिसमें उन पर यूक्रेनी बच्चों को पकड़कर रूस भेजने का आरोप है।

हंगरी, यूरोपीय संघ का सदस्य होने के बावजूद, आई.सी.सी. के आदेश के तहत पुतिन को गिरफ्तार नहीं करेगा। हंगरी ने आई.सी.सी. की उस संधि से खुद को अलग कर लिया है, जिसके तहत किसी हस्ताक्षरकर्ता देश को न्यायालय के आदेश का पालन करना अनिवार्य होता।

फिर भी, पुतिन को ऐसे देशों से होकर गुजरना पड़ेगा, जो आई.सी.सी. के सदस्य हैं और रास्ते में वे उन्हें गिरफ्तार कर सकते हैं। इस जोखिम को टालने के लिए सुरक्षित मार्ग की व्यवस्था पर विचार किया जा रहा है।